

रविवार 19 जनवरी, 2020

विषय — जिंदगी

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 27 : 14

"यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह!"

उत्तरदायी अध्ययन: लूका 12 : 22-24, 27-32

- 22 पने प्राण की चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएंगे; न अपने शरीर की कि क्या पहिनेंगे।
23 भोजन से प्राण, और वस्त्र से शरीर बढ़कर है।
24 कौवों पर ध्यान दो; वे न बोते हैं, न काटते; न उन के भण्डार और न खत्ता होता है; तौभी परमेश्वर उन्हें पालता है; तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कहीं अधिक है।
27 सोसनों के पेड़ों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न परिश्रम करते, न काटते हैं: तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव में, उन में से किसी एक के समान वस्त्र पहिने हुए न था।
28 इसलिये यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा पहिनाता है; तो हे अल्प विश्वासियों, वह तुम्हें क्यों न पहिनाएगा?
29 और तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और न सन्देह करो।
30 क्योंकि संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं: और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है।
31 परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएंगी।
32 हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।

पाठ उपदेश

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

बाइबल

1. गिनती 13: 20 (तुम रहो) (से 1st.)

²⁰और तुम हियाव बान्धे चलो, और उस देश की उपज में से कुछ लेते भी आना।

2. सभोपदेशक 3 : 11 (से :), 14

¹¹ उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते हैं।

¹⁴ मैं जानता हूँ कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह सदा स्थिर रहेगा; न तो उस में कुछ बढ़ाया जा सकता है और न कुछ घटाया जा सकता है; परमेश्वर ऐसा इसलिये करता है कि लोग उसका भय मानें।

3. रोमियो 8 : 28

²⁸ और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

4. व्यवस्थाविवरण 30 : 16 (I)

¹⁶ क्योंकि मैं आज तुझे आज्ञा देता हूँ, कि अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करना, और उसके मार्गों पर चलना, और उसकी आज्ञाओं, विधियों, और नियमों को मानना, जिस से तू जीवित रहे, और बढ़ता जाए, और तेरा परमेश्वर यहोवा उस देश में जिसका अधिकारी होने को तू जा रहा है, तुझे आशीष दे।

5. व्यवस्थाविवरण 31 : 1-3 (से 2nd), 7, 8, 22, 23

¹ और मूसा ने जा कर यह बातें सब इस्राएलियों को सुनाई।

² और उसने उन से यह भी कहा, कि आज मैं एक सौ बीस वर्ष का हूँ; और अब मैं चल फिर नहीं सकता; क्योंकि यहोवा ने मुझ से कहा है, कि तू इस यरदन पार नहीं जाने पाएगा।

³ तेरे आगे पार जाने वाला तेरा परमेश्वर यहोवा ही है।

⁷ तब मूसा ने यहोशू को बुलाकर सब इस्राएलियों के सम्मुख कहा, कि तू हियाव बान्ध और दृढ़ हो जा; क्योंकि इन लोगों के संग उस देश में जिसे यहोवा ने इनके पूर्वजों से शपथ खाकर देने को कहा था तू जाएगा; और तू इन को उसका अधिकारी कर देगा।

⁸ और तेरे आगे आगे चलने वाला यहोवा है; वह तेरे संग रहेगा, और न तो तुझे धोखा देगा और न छोड़ देगा; इसलिये मत डर और तेरा मन कच्चा न हो॥

²² तब मूसा ने उसी दिन यह गीत लिख कर इस्राएलियों को सिखाया।

- 23 और उसने नून के पुत्र यहोशू को यह आज्ञा दी, कि हियाव बान्ध और दृढ़ हो; क्योंकि इस्राएलियों को उस देश में जिसे उन्हें देने को मैं ने उन से शपथ खाई है तू पहुंचाएगा; और मैं आप तेरे संग रहूंगा॥

6. यहोशू 1 : 1-9

- 1 यहोवा के दास मूसा की मृत्यु के बाद यहोवा ने उसके सेवक यहोशू से जो नून का पुत्र था कहा,
- 2 मेरा दास मूसा मर गया है; सो अब तू उठ, कमर बान्ध, और इस सारी प्रजा समेत यरदन पार हो कर उस देश को जा जिसे मैं उन को अर्थात् इस्राएलियों को देता हूं।
- 3 उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा, अर्थात् जिस जिस स्थान पर तुम पांव धरोगे वह सब मैं तुम्हें दे देता हूं।
- 4 जंगल और उस लबानोन से ले कर परात महानद तक, और सूर्यास्त की ओर महासमुद्र तक हित्तियों का सारा देश तुम्हारा भाग ठहरेगा।
- 5 तेरे जीवन भर कोई तेरे साम्हने ठहर न सकेगा; जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूंगा; और न तो मैं तुझे धोखा दूंगा, और न तुझ को छोड़ूंगा।
- 6 इसलिये हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा; क्योंकि जिस देश के देने की शपथ मैं ने इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी उसका अधिकारी तू इन्हें करेगा।
- 7 इतना हो कि तू हियाव बान्धकर और बहुत दृढ़ हो कर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझे दी है उन सब के अनुसार करने में चौकसी करना; और उस से न तो दाहिने मुड़ना और न बाएं, तब जहां जहां तू जाएगा वहां वहां तेरा काम सफल होगा।
- 8 व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।
- 9 क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहां जहां तू जाएगा वहां वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा॥

7. यशायाह 40 : 28-31

- 28 क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? यहोवा जो सनातन परमेश्वर और पृथ्वी भर का सिरजनहार है, वह न थकता, न श्रमित होता है, उसकी बुद्धि अगम है।
- 29 वह थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ्य देता है।
- 30 तरूण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं, और जवान ठोकर खाकर गिरते हैं;
- 31 परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की नाई उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे॥

8. यशायाह 41 : 6, 13

- 6 वे एक दूसरे की सहायता करते हैं और उन में से एक अपने भाई से कहता है, हियाव बान्ध!
13 क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा, तेरा दहिना हाथ पकड़कर कहूंगा, मत डर, मैं तेरी सहायता करूंगा॥

9. फिलिप्पियों 2 : 12 (काम)-16

- 12 ...डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।
13 क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस न अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।
14 सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो।
15 ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, जिन के बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों की नाई दिखाई देते हो।
16 कि मसीह के दिन मुझे घमण्ड करने का कारण हो, कि न मेरा दौड़ना और न मेरा परिश्रम करना व्यर्थ हुआ।

10. इफिसियों 2 : 10

- 10 क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया॥

11. I यूहन्ना 2 : 24, 25

- 24 जो कुछ तुम ने आरम्भ से सुना है वही तुम में बना रहे: जो तुम ने आरम्भ से सुना है, यदि वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में, और पिता में बने रहोगे।
25 और जिस की उस ने हम से प्रतिज्ञा की वह अनन्त जीवन है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 550 : 5-7

ईश्वर ही जीवन या बुद्धि है, जो जानवरों के साथ-साथ पुरुषों की व्यक्तित्व और पहचान को बनाता और संरक्षित करता है।

2. 487 : 27-1

यह समझ कि जीवन ईश्वर है, आत्मा, जीवन की मृत्यु रहित वास्तविकता, उसकी सर्वशक्तिमानता और अमरता में हमारे विश्वास को मजबूत करके हमारे दिनों को लंबा कर देती है।

यह विश्वास एक समझे हुए सिद्धांत पर निर्भर करता है। यह सिद्धांत संपूर्ण रोगग्रस्त बनाता है, और चीजों के स्थायी और सामंजस्यपूर्ण चरणों को सामने लाता है।

3. 258 : 13-15, 16-18, 21-27

ईश्वर मनुष्य में अनंत विचार व्यक्त करता है जो हमेशा अपने आप को विकसित करता है, एक व्यापक आधार से ऊंचा और ऊंचा होता है। ...हम ईश्वर के बारे में मनुष्य की सच्ची ईश्वरीय छवि और समानता के रूप में नहीं जानते हैं।

मानव क्षमताएँ बढ़ जाती हैं और अनुपात में परिपूर्ण हो जाती हैं क्योंकि मानवता मनुष्य और ईश्वर की सच्ची अवधारणा को प्राप्त करती है।

मनुष्यों में आध्यात्मिक व्यक्ति और उसके विचार की अनंत सीमा का बहुत ही अपूर्ण अर्थ है। अनन्त जीवन उसी का है।

4. 265 : 10-15

आत्मा के लिए मामले को त्यागने का यह वैज्ञानिक अर्थ है, मनुष्य को देवता में अवशोषण और उसकी पहचान के नुकसान का सुझाव देता है, लेकिन यह व्यक्ति की व्यापकता, विचार और कर्म के व्यापक क्षेत्र, एक अधिक विस्तृत प्रेम, एक उच्च और अधिक स्थायी शांति पर निर्भर करता है।

5. 317 : 16-20

मनुष्य का व्यक्तित्व कम मूर्त नहीं है क्योंकि यह आध्यात्मिक है और क्योंकि उसका जीवन पदार्थ की दया पर नहीं है। उनकी आध्यात्मिक व्यक्तित्व की समझ, मनुष्य को सच्चाई में अधिक वास्तविक, अधिक दुर्जेय बनाती है और उसे पाप, बीमारी और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।

6. 128 : 14-19

मनुष्य के अव्यक्त क्षमताओं और संभावनाओं को विकसित करने के विज्ञान का ज्ञान। यह विचार के वातावरण का विस्तार करता है, जिससे नश्वर व्यापक और उच्चतर क्षेत्रों तक पहुँच प्राप्त करता है। यह विचारक को अंतर्दृष्टि और दृष्टिकोण की अपनी मूल हवा में उठाता है।

7. 167 : 6-7, 17-31

हम ईश्वरीय विज्ञान में जीवन को केवल उसी रूप में दर्शाते हैं जब हम कॉर्पोरेट अर्थ से ऊपर रहते हैं और इसे ठीक करते हैं।

एक ईश्वर के पास और आत्मा की शक्ति का लाभ उठाने के लिए, आपको ईश्वर से प्रेम करना चाहिए।

"क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में।" मांस और आत्मा कार्रवाई में अधिक एकजुट नहीं हो सकते हैं, अच्छाई बुराई से मेल खा सकती है। अड़ियल और आधे-अधूरे पद पर बैठना या आत्मा और भौतिक, सत्य और त्रुटि के साथ समान रूप से काम करने की अपेक्षा करना बुद्धिमानी नहीं है। एक तरीका है - ईश्वर और उसका विचार - जो आध्यात्मिक होने की ओर ले जाता है। शरीर की वैज्ञानिक सरकार को दिव्य मन के माध्यम से प्राप्त किया जाना चाहिए। शरीर पर किसी अन्य तरीके से नियंत्रण हासिल करना असंभव है। इस बुनियादी बिंदु पर, डरपोक रूढ़िवाद बिल्कुल बेवजह है। केवल सत्य पर कट्टरपंथी निर्भरता के माध्यम से वैज्ञानिक उपचार शक्ति का एहसास किया जा सकता है।

8. 483 : 30-32

किसी व्यक्ति को समयबद्धता या प्रसार के बिना अपने मिशन को पूरा करना चाहिए, क्योंकि अच्छी तरह से काम करने के लिए निस्वार्थ रूप से काम करना चाहिए।

9. 514 : 10-18

नैतिक साहस "यहूदा के गोत्र का शेर है," मानसिक दायरे के राजा। मुक्त और निडर यह जंगल में घूमता है। यह खुले मैदान में निहित है, या "हरे चरागाहों में रहता है, ... शांत पानी के बगल में।" दिव्य से मानव के लिए लाक्षणिक संचरण में, परिश्रम, मुस्तैदी और दृढ़ता की तुलना "एक हजार पहाड़ियों पर मवेशियों" से की जाती है। वे कठोर संकल्प का सामान ले जाते हैं, और उच्चतम उद्देश्य के साथ तालमेल रखते हैं।

10. 28 : 32-6

समाज में बहुत अधिक पशु साहस है और पर्याप्त नैतिक साहस नहीं है। ईसाईयों को देश और विदेश में त्रुटि के खिलाफ हथियार उठाने चाहिए उन्हें स्वयं में और दूसरों में पाप से जूझना चाहिए, और इस युद्ध को तब तक जारी रखें जब तक वे अपना कोर्स पूरा नहीं कर लेते। यदि वे विश्वास बनाए रखेंगे, तो उनके पास आनन्द का ताज होगा।

11. 97 : 22-25, 29-3

सत्य बोलने के लिए साहस चाहिए; क्योंकि जितना अधिक सत्य अपनी आवाज उठाएगा, त्रुटि उतनी ही जोर से चिल्लाएगी, जब तक कि इसकी प्रारंभिक ध्वनि हमेशा के लिए गुमनामी में चुप नहीं हो जाती।

त्रुटि को बाहर निकालने और बीमारों को ठीक करने के एपोस्टोलिक कार्य द्वारा, ईसाई धर्म फिर से जीवन का प्रदर्शन कर रहा है जो सत्य है और सत्य है जो जीवन है। पृथ्वी के पास उन उत्पीड़न के लिए कोई पुनर्भुगतान नहीं है जो ईसाई धर्म में एक नया कदम रखते हैं; लेकिन सताए गए व्यक्ति की आध्यात्मिक पुनरावृत्ति को नश्वर कलह के ऊपर और दिव्य प्रेम के उपहार में अस्तित्व की ऊंचाई में आश्वासन दिया जाता है।

12. 254 : 2-6, 10-12

व्यक्ति सुसंगत हैं, जो देख रहे हैं और प्रार्थना कर रहे हैं, "वे दौड़ सकते हैं और नमित करेंगे, जा रहे हैं और थकेंगे न," जो तेजी से अच्छाई हासिल करते हैं और अपना स्थान प्राप्त करते हैं, या धीरे-धीरे प्राप्त करते हैं और निराश नहीं होते हैं।

जब हम धैर्यपूर्वक ईश्वर की प्रतीक्षा करते हैं और सत्य की तलाश करते हैं, तो वह हमारे मार्ग का निर्देशन करता है।

13. 326 : 16-22

जीवित रहने का उद्देश्य और मकसद अब हासिल किया जा सकता है। यह बिंदु जीत गया, जैसा कि आपको शुरू करना चाहिए, आपने किया है। आप क्रिश्चियन साइंस के अंक-तालिका में शुरू कर चुके हैं, और गलत इरादे के अलावा कुछ भी आपकी उन्नति में बाधा नहीं बन सकता है। सच्चे इरादों के साथ काम करने और प्रार्थना करने से, आपके पिता आपके लिए रास्ता खोलेंगे। "किस ने तुम्हें रोक दिया, कि सत्य को न मानो?"

14. 262 : 10-23

हमें जीवन में सत्य और भौतिकता को खोजने के अपने अथक स्पंदन को उलट देना चाहिए - और ईश्वर के अमर विचार के लिए नश्वर से ऊपर, भौतिक इंद्रियों की गवाही से ऊपर उठना होगा। ये स्पष्ट, उच्च विचार भगवान-जैसे मनुष्य को उसके अस्तित्व के पूर्ण केंद्र और सीमा तक पहुंचने के लिए प्रेरित करते हैं।

अय्यूब ने कहा: "मैं कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आंखें तुझे देखती हैं;" पुरुष अय्यूब के विचार को प्रतिध्वनित करेंगे, जब पदार्थ का दर्द और सुख पूर्वसूचक होना बंद हो जाएगा। वे फिर जीवन और खुशी, खुशी और दुःख के झूठे अनुमान को छोड़ देंगे, और प्रेमपूर्वक आनंद प्राप्त करने, धैर्य से काम लेने और ईश्वर के विपरीत सभी को जीतने का आनंद प्राप्त करेंगे।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्टरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6